HISTORY

B.A.(Hon's) PART-I

Paper-I (Ancient Indian History)

Unit-II (Major Buddhist Education Centers)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 37

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

"प्रमुख बौद्ध शिक्षा के केंद्र"

(Major Buddhist Education Centers)

प्रमुख बौद्ध शिक्षा के केंद्र निम्न लिखित थे।

नालन्दा विश्वविद्यालय:–

प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण स्थान रखता है । इस विश्वविद्यालय के बारे में अधिक जानकारी हमें चीनी यात्रियों से मिलती है । 5 वीं से सातवीं शताब्दी के मध्य यह बौद्ध विद्या केन्द्र अपनी महत्वपूर्ण स्थिति में था। यह विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार में स्थित (राजगीर) के समीप स्थित है। आज इसके ध्वंसावशेष बड़गांव ग्राम तक फैले हुए हैं । इस विश्वविद्यालय के निर्माण के विषय में निश्चित जानकारी का अभाव है फिर भी गुप्त वंशी शासक कुमार गुप्त (414–455) ने इस बौद्ध संघ को पहला दान दिया था । हवेन सांग के अनुसार लगभग 470 ई० में गुप्त सम्राट नरसिंह गुप्त बालादित्य ने नालन्दा में एक सुन्दर मंदिर निर्मित करवाकर इसमें 80 फुट ऊंची तांबे की बुद्ध प्रतिमा को स्थापित करवाया। अब तक हुए उत्खनन में मिले अवशेषों से ऐसा प्रतीत होता है कि यहां पर व्याख्यान हेतु 7 बडे कक्ष एवं 300 छोटे कक्ष बनाये गये थे । विद्यार्थियों के रहने के लिए छात्रावासों की सुविधा थी। शैलेन्द्र शासक बाल पुत्र देव ने तत्कालीन मगध नरेश देवपाल की अनुमति से नालन्दा में जावा से आये भिक्षुओं के निवास के लिए एक बिहार का निर्माण करवाया था। इस अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय

में भारत, जावा, चीन, तिब्बत, लंका एवं कोरिया के विद्यार्थी विद्या ग्रहण करते थे। यहां पर हर विषय की शिक्षा दी जाती थी, पर बौद्ध धर्म की महायान शाखा का अध्ययन–अध्यापन विशेष रूप होता था। यहां हस्तलिखित ग्रंथों का एक नौ मंजिला पुस्तकालय था जो तीन बड़े भवन रत्न सागर, रत्नोदधि एवं रत्नरंजक नाम से विभाजित था।

जिस समय ह्वेनसांग इस विद्या केन्द्र में अध्ययनरत था उस समय यहां विद्यार्थियों की कुल संख्या करीब 10000 थी, पर इत्सिंग ने विद्यार्थियों की संख्या मात्र 3000 बतायी । इस शिक्षा केन्द्र में शिक्षकों संख्या लगभग 1,500 थी। ह्वेनसांग भी यहां की शिक्षक मण्डली का एक सदस्य था। शीलभद्र नाम का एक विद्वान इस शिक्षा केन्द्र का कुलपति था। ह्वेनसांग अपने समय के अनेक विद्वानों धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभा मित्र, जिनमित्र, आर्यदेव, दिङ्नाग) ज्ञानचन्द्र आदि का उल्लेख करता है । इसके अनुसार इसी नालन्दा विश्वविद्यालय से नागार्जुन, वसुबंधु, असंग, धर्मकीर्ति जैसे महायानी विचारक आगे बढ़े। इस विश्वविद्यालय का प्रशासन कठोर था और प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को द्वारपाल से वाद–विवाद में उत्तीर्ण होने पर ही प्रवेश मिलता था। वहाँ समय की जानकारी के लिए जल घड़ी का उपयोग होता था। यहां पर शिक्षा पाली भाषा में दी जाती थी । इस महान विद्या केन्द्र के विनाश के विषय में ठोस जानकारी का अभाव है फिर भी ध्वंसावशेषों के अध्ययन से लगता है कि किसी भयंकर अग्निकाण्ड में यह विश्वविद्यालय नष्ट हुआ।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय–

करीब आठवीं शताब्दी में पालवंशीय धर्मपाल द्वारा बिहार प्रांत के भागलपुर में इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। पूर्व मध्यकालीन भारतीय इतिहास में विक्रमशिला विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान था। यहां पर धर्म एवं दर्शन अतिरिक्त न्याय, तत्व ज्ञान एवं व्याकरण का भी अध्ययन कराया जाता था। इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विद्वानों में विरोचन, ज्ञान पद, बुद्ध, रत्नाकर, शान्ति ज्ञानश्री मित्र, ब्रज एवं अभयंकर के नाम प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनायें बौद्ध साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं । इस विश्वविद्यालय के सर्वाधिक प्रतिभाशाली भिक्षु दिपंकर ने लगभग दो सौ ग्रंथों की रचना की। इस शिक्षा के केन्द्र में लगभग 3000 अध्यापक कार्यरत थे। छात्रों के विषय में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। यहां पर विदेशों से भी छात्र अध्ययन हेतु आते थे। संभवतः तिब्बत के छात्रों की संख्या सर्वाधिक थी।

Dr. Guddy kumari (A.N.D college)

1203 में बख्तियार खिलजी के आक्रमण के परिणामस्वरूप यह विश्वविद्यालय नष्ट हो गया, इस सन्दर्भ में हमें 'तबकाते नासिरी' से जानकारी मिलती । सम्भवतः इस विश्वविद्यालय को दुर्ग समझ कर नष्ट कर दिया।

धन्यवाद

Dr. Guddy kumari (A.N.D College)